EGM EMPIRE GRANITE & MARBLE
Huge stock of ITALIAN MARBLE/GRANITE
BOTTICINO CLASSICO| PERLATO SICILIA | DYNA | MONTE CARLO |TRAVERTINE & All Colored Italian Marble
Indian, Imported Granite & Marble
At price, you can not believe Empire Deals
Empire gives benefit directly to Consumers / Customers
PREMIUM QUALITY GUARANTEED ESTD.1989
H.O. Plot No. 150, Phase-I, Ind. Area, Pkl. Pawan Mittal (M.D.) (M) 92167-31100
Branch: Barwala-Derabassi Road, Barwala (M) 9416595018
Please visit us: www.egmstones.com

TODAY'S EVENT

सुने प्रोफेसर नील कमल पुरी को

सिटी रिपोर्टर ▶ अंग्रेजी उपन्यासकार और प्रोफेसर नील कमल पुरी आज रूमर मिल कैफे सेक्टर 7 में अपनी किताब "रिमेंबर द फॉरगेट' पर चर्चा करेंगी। वे किताब के लेखन से लेकर इसके रिसर्च वर्क के बारे में भी बताएंगी। यह कार्यक्रम रूमर मिल में दोपहर 12 बजे से शुरू होगा। एंट्री फ्री है।

उर्दू साहित्य पर खास सेशन

सिटी रिपोर्टर ▶ चंडीगढ़ साहित्य अकादमी द्वारा आज द गोल्डन पीरियड ऑफ उर्दू अफसाना पर एक खास सेमिनार रखा गया है। सेशन में उर्दू साहित्यकारों पर चर्चा होगी। इसमें प्रोफेसर नशीर नकवी की-नोट एड्रेस देंगे। साहित्यकार इस्मत चुगताई पर रेणु बहल, कृष्ण चंद्र पर जामुराद खान, सआदत हसन मंटो पर शरद दत्त और राजिंदर सिंह बेदी पर फरहत उल्लाह खान चर्चा करेंगे। यह कार्यक्रम सुबह 11 बजे यूटी गेस्ट हाउस में होगा। इसमें कोई भी हिस्सा ले सकता है।

फीडबैक प्लीज़

अपने सुझाव, खबर या कार्यक्रम के लिए मेल करें - citylife@dbcorp.in पर। या फोन करें - 0172-3988884 पर।

'अब जरूरत स्मार्ट हाउसेज की'

ABOUT SMART HOUSE शहर में स्मार्ट हाउसेज (ग्रीन हाउसेज) की गिनती न के बराबर है लेकिन दूसरे शहरों में लोगों ने स्मार्ट हाउसेज को बनाना शुरू कर दिया है। एक्सपर्ट्स की मानें तो शहर तभी पूरी तरह से स्मार्ट कहलाएगा, अगर यहां के घर भी स्मार्ट होंगे...

सिटी रिपोर्टर ▶

देश की टॉप-100 स्मार्ट सिटीज में सिटी ब्यूटीफुल चंडीगढ़ का भी नाम है। टॉप-20 में इसका नाम होगा या नहीं, यह फैसला आना अभी बाकी है। खैर, जिस शहर में तमाम सुविधाएं हों, वही स्मार्ट सिटी कहलाता है। लेकिन आप यह जानकर हैरान होंगे कि स्मार्ट सिटी की दौड़ में लगी हमारी सिटी में बहुत कम घर ऐसे हैं जिन्हें स्मार्ट हाऊस(ग्रीन हाऊस) कहा जा सके। ज्यादा महंगा घर बना लेने से, घर स्मार्ट नहीं हो जाता है। यही वजह है कि हमारा शहर अभी तक दूसरे शहरों में बनने वाले स्मार्ट हाउसेज की दौड़ में बहुत पीछे है। आर्किटेक्ट्स की मानें तो अहमदाबाद के लोगों ने स्मार्ट हाऊस कॉन्सेप्ट को सबसे पहले अडॉप्ट किया है। ऐसे ही दिल्ली, बेंगलुरू और पुणे है, जहां पर स्मार्ट हाऊस बन रहे हैं। अब हमें भी इस दौड़ में तेजी से दौड़ना होगा, तब जाकर शहर पूरी तरह से स्मार्ट बन पाएगा। यह जानकारी हमने शनिवार को शहर के एक होटल में हुए सेमिनार ऊर्जावरन 2015-2016 से जुटाई है। यह सेमिनार बिल्डिंग फॉर फ्यूचर्स पर था, जिसमें ऊर्जावरन के चेयरमैन आशु गुप्ता और इश्रय (इंडियन सोसायटी ऑफ हीटिंग रेफ्रेजेटिंग एंड एयर कंडीशनिंग इंजीनियर्स) के रीजनल डायरेक्टर पंकज सरीन और चंडीगढ़ के फेमस आर्किटेक्ट संगीत शर्मा मौजूद थे।

सबसे पहले जानिए क्या होता है स्मार्ट हाऊस: स्मार्ट हाऊस की बात करें तो ऐसे घर जो इंसान को तंदरुस्त और तरो-ताजा महसूस करवाएं। मतलब वहां पर ज्यादा से ज्यादा चीजें प्राकृतिक होनी चाहिए, फिर चाहे वह रोशनी है या फिर आबोहवा। बिजली की बढ़ती खपत और दिन-ब-दिन कम होते प्राकृतिक स्त्रोतों के कारण अब ऐसे घरों की जरूरत है जिसमें ऊर्जा की कम-से-कम खपत हो। जो उपयोगी और क्रियाशील हों।

क्या कहते हैं एक्सपर्ट

आधुनिक समय में ऊर्जा की खपत भी बढ़ रही है। इस कारण ग्लोबल वार्मिंग हो रही है और प्राकृतिक स्रोतों में भी कमी आ रही है। आने वाली पीढ़ी के लिए इस ग्रह को प्राकृतिक तौर पर सुंदर और सुरक्षित बनाने की जरूरत है। ऐसे में हमें कॉमर्शियल बिल्डिंग्स के साथ-साथ घर भी ऐसे बनाने होंगे जो उपयोगी और क्रियाशील हों। ●
- **आशु गुप्ता,** चेयरमैन, ऊर्जावरन

सस्टेनेबल हाउस बनाने में ज्यादा खर्च नहीं आता। मान लीजिए कोई 250 गज यानी कि 10 मरले में दो मंजिल का सस्टेनेबल हाउस बनाना चाहता है। तो उसके निर्माण का खर्च साधारण घर पर आने वाले खर्च से महज 5 से 7 प्रतिशत ही बढ़ेगा। इन घरों में जो एनर्जी सेविंग होगी, वह खर्च एक साल में रिकवर हो जाएगा। ●
- **पंकज सरीन,** रीजनल डायरेक्टर नॉर्थ-टू, इश्रय

मेरे हिसाब से अभी तक शहर में कोई भी घर ऐसा नहीं है, जिसे हम प्रैक्टिकल या सस्टेनेबल कह सकें, जबकि ऐसे घर बनने चाहिए। टेक्नोलॉजी का घर में इस्तेमाल करने वाले लोग अभी कम हैं। दिल्ली, अहमदाबाद को ही ले लीजिए वहां लोग एनर्जी सेविंग को लेकर अवेयर हैं। इसलिए वहां ऐसे कई घर हैं। स्मार्ट सिटी में घर भी स्मार्ट होने चाहिए। ●
- **संगीत शर्मा,** आर्किटेक्ट

देश के बेस्ट 35 कंटेंपरेरी हाउसेज में एक चंडीगढ़ से भी

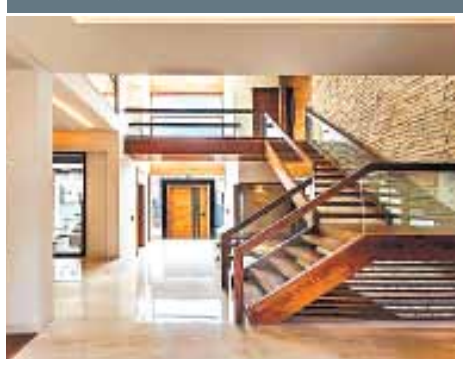

एआईजी(इंटीरियर आर्किटेक्चर ग्रुप) ने हालही में एक बुक लॉन्च की है। इसमें देश के 35 कंटेंपरेरी हाउसेज और उनके डिजाइन पर बात की गई है, जिनमें एक घर चंडीगढ़ से भी लिया गया है। सेक्टर 18 में बनाए गए इस घर को शहर की ही एक कंपनी ने डिजाइन किया है। जिस स्मार्ट घर की बात हम कर रहे हैं, यह घर काफी हद तक उस पर खरा उतरता है। अश्विनी दुग्गल बताते हैं, 'यह बुक हालही में पैन इंडिया और पैन एशिया में लॉन्च हुई थी। यह बुक 2 से 3 साल तक रहती है, ऐसा नहीं है कि इसे अभी लॉन्च किया है और फिर दो महीने बाद दोबारा से लॉन्च कर दिया जाएगा। इसलिए इसमें वही घर लिए जाते हैं, जो बहुत यूनीक हों। जैसे कि सेक्टर 18 में एक कनाल में बनाया गया यह घर, जिसे हमें स्मार्ट घर कह सकते हैं।

www.cleopatradayspa.com
the making of a Perfect Bride
Bridal & Pre-Bridal Package ₹15,500/-
Book your Appointment for Trial Makeup*
Founder & MD Richa Agarwal with Actress Sharmila Tagore & Harveen
Awarded for Best Chain of Bridal & Make-Overs 2015
Member of : AIA • ISPA • IDA • BWSSC
CLEOPATRA® Chain of Beauty Wellness Spa & Makeup
CHANDIGARH : SCO 34 37, 6, Floor, Sector 9-D Tel: 4633821, 4630821 • SCO 253, Sector 44, Tel: 4069821, MOHALI : SCO 18, Phase 3B2, Tel: 4630824 • SCF 104, Phase 10, Tel: 4002800, 4004900, PANCHKULA : DSS 402, Sector 8, 4640822, 5066722, 9779388156, ZIRAKPUR: #1, VIP Road, Chandigarh Ambala Highway, Mob: 84272 31166, KHARAR: SCO 56, Sector 125, New Sunny Enclave, Near KFC, Tel : 0160 2060390, PATIALA: Tel: 2309611

PERFORMANCE

मुश्किल रागों को संजीदगी से गा दिया गौरी गूहा ने...

शनिवार शाम प्राचीन कला केंद्र की 218वीं मासिक बैठक में टोरंटो बेस्ड वोकलिस्ट गौरी गूहा ने परफॉर्म किया

सिटी रिपोर्टर ▶

बहुत कम वोकलिस्ट्स ऐसे होते हैं जो हर भाषा में न सिर्फ गा सकते हैं, बल्कि उनका परफॉर्मेंस का अंदाज भी सबसे हटके होता है। कुछ ऐसा ही अंदाज है टोरंटो बेस्ड वोकलिस्ट गौरी गूहा का। जो न सिर्फ अपनी मातृ भाषा बंगाली में अच्छा गाती हैं, बल्कि राजस्थानी, मारवाड़ी, हिंदी और मराठी में खूब अच्छा गा लेती हैं। यही वजह है कि इनकी परफॉर्मेंस को पसंद किया जाता है। शनिवार शाम प्राचीन कला केंद्र की 218वीं मासिक बैठक में इन्होंने परफॉर्मेंस दी। इस गौरी ने शास्त्रीय गायन के अलावा कुछ भजन और अलग-अलग भाषाओं के लोकगीत भी गाए। गौरी पंडित ने एकानन से संगीत की शिक्षा ली और अब पंडित अजय चक्रवर्ती से संगीत की बारीकियों को सीख रही हैं। पिछले 35 साल से वे विश्वभर में परफॉर्म कर चुकी हैं और कई सम्मान भी पा चुकी हैं। मुश्किल रागों को संजीदगी से गाना इनकी विशेषता है। ...और यही इनकी परफॉर्मेंस में देखने को मिला।

परफॉर्मेंस की शुरुआत राग 'अभोगी' से

गौरी ने राग अभोगी से अपनी परफॉर्मेंस की शुरुआत की। आलाप के बाद विलंबित पेश किया। एक ताल में इस रचना के बोल थे 'कैसे कहूं दुखवा मैं कासे कहूं।' इसके बाद द्रुत ख्याल तीन ताल में पेश किया, जिसके बोल थे 'लगन मोरी लागी शाम बदन से'। इसे भी ऑडियंस ने खूब पसंद किया। इसके बाद गौरी ने एक मराठी भजन , 'सिद्ध भजो' को गाया, फिर द्रुत ख्याल राग झिंझोटी में 'मोरा मन हर लीना सावरियां रे' और राजस्थानी धुन में मीरा भजन 'मेरे घर आयो रे प्रीतम प्यारा' को गाया। इनकी अंतिम प्रस्तुति रही राग जौनपुरी में जिसके बोल थे 'श्री राम कहे समझाई सुनो लछमन प्यारे भाई।'

STAGE PLAY

अकेलेपन में जिंदगी मौत से हार जाती है

पंजाब कला भवन में शनिवार शाम नाटक 'हो रहेगा कुछ न कुछ' पेश किया गया है, इसमें इंसान के अकेलेपन का दर्द दिखाया गया।

सिटी रिपोर्टर ▶

कई बार साथ रहते हुए भी अकेलापन खाने लगता है। कुछ ऐसी ही कहानी है नाटक 'हो रहेगा कुछ न कुछ' की। शनिवार को इसे पंजाब कला भवन में पेश किया गया। इसे नम्रता शर्मा ने निर्देशित किया। नाटक एक मां और बेटी की बातचीत पर आधारित है। बेटी अपने पुराने समय में हुए खराब अनुभव से तंग है और मां उसे हमेशा मजबूत बनाने की कोशिश करती है। डेढ़ घंटे के इस नाटक में केवल मां और बेटी ही हैं। हालांकि फ्लैश बैक में बेटी का प्रेमी भी नजर आता है। नाटक अदाकारी के मामले में अच्छा रहा। इसके सेट रियलिस्टिक अप्रोच में डिजाइन किया गया।

नाटक जैसी नाम की एक लड़की पर आधारित है, जिसे मिरगी के दौरे पड़ते हैं। इस वजह से उसकी शादी कामयाब नहीं हो पाती और उसका पति उसे छोड़ कर चला जाता है। इस लड़की का बेटा गलत राह पर निकल जाता है। वह अंदर से टूट चुकी होती है और अपनी मां को अपने दुखड़े सुनाती है। मां उसे समझाती है, लेकिन जैसी को कोई उम्मीद नजर नहीं आती। जैसी अपने आप को मारने का फैसला करती है। मां सोचती है कि जैसी मजाक कर रही है, लेकिन अंत में जैसी जान दे देती है।

फोटोशूट भी फ्री और कैलेंडर भी

NEW CALENDAR

चंडीगढ़ के राजीव गर्ग को फोटोग्राफी का शौक है। उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए यंगस्टर्स को इक्ट्ठा कर फ्री फोटोशूट करके कैलेंडर बनाया है। इसे कोई भी फ्री में ले सकता है।

सिटी रिपोर्टर ▶

कैलेंडर की 12 तस्वीरों में | इस कैलेंडर में ऑस्ट्रेलिया की यास्मिन, यूएस की स्वाति ठाकुर, स्विटजरलैंड की एंड्रिया को इस कैलेंडर में लिया है। बाकी के मॉडल्स नॉर्थ इंडिया से हैं, इनमें चंडीगढ़ व मोहाली से सावन मैडमैन, रजाकदीप कौर, दीपिका ठाकुर, जतिंदर कौर, सुहानी भसीन हैं। दिल्ली से आकाश चावला, लद्दाख के टेसनअमो व शिमला से रेणुका व दीपिका ठाकुर हैं।

एक ऐसा कैलेंडर जिसके लिए मॉडल्स को चंडीगढ़, लद्दाख, गोवा और पुष्कर ले जाया गया। वहां उनका फोटोशूट हुआ और तस्वीरों को एक कैलेंडर में समेटा गया। इसके लिए मॉडल्स से न तो कोई फीस ली गई और न ही ट्रैवलिंग एक्सपेंसेज। ...और तो और यह कैलेंडर फ्री में बांटा जा रहा है। 1000 कैलेंडर्स बनाए गए हैं। कोई भी सोशल मीडिया पर राजीव गर्ग से संपर्क कर कैलेंडर ले सकता है। अब आप सोच रहे होंगे कि ऐसा क्यों? ऐसा इसलिए क्योंकि शहर के फोटोग्राफर राजीव गर्ग की फोटोग्राफी में बेहद दिलचस्पी है। ...और वे तस्वीरों को कलेक्ट कर उन्हें कैलेंडर की शेप देते हैं, फिर चाहे खर्च जितना भी हो जाए। राजीव ने दूसरा कैलेंडर लॉन्च किया है। इससे पहले उन्होंने 2015 में भी ऐसा ही कैलेंडर बनाया था। शनिवार को इस कैलेंडर को लॉन्च किया गया। राजीव से बात हुई तो कहने लगे, 'अपनी तस्वीरों के माध्यम से लोग कैलेंडर से जुड़े रहें इसलिए मैंने यह कैलेंडर बनाया। इसके लिए पहले सोशल मीडिया पर ऑडिशन के लिए पोस्ट किया था। मुझे यंगस्टर्स ने तकरीबन 108 प्रोफाइल्स भेजीं। उनमें से मैंने 24 प्रोफाइल्स को शॉर्टलिस्ट किया। 40 दिन तक शूट चला, प्रॉपर फोटोशूट को 10 दिन लगे, बाकी के दिन ट्रैवलिंग में गुजरे और फाइनल 12 फोटोग्राफ्स को कैलेंडर पर प्रिंट किया।

'अपनी जड़ों को बचाने की कोशिश कर रही हूं'

ONE TO ONE

नम्रता शर्मा जपे राजस्थान से हैं। इन्होंने कई हिंदी और पंजाबी नाटक किए हैं, पर इन दिनों मारवाड़ी थिएटर को प्रोमोट कर रही हैं। उनसे बातचीत।

सिटी रिपोर्टर ▶

'राजस्थान में मारवाड़ी थिएटर अब कम होने लगा है। ऐसा इसलिए क्योंकि युवा लोगों की दिलचस्पी मॉडर्न थिएटर में ज्यादा हो गई है। मैं भी मॉडर्न थिएटर करती हूं, पर अपनी जड़ों को बचाए रखने की जिम्मेदारी भी मेरी ही बनती है। इसीलिए मारवाड़ी थिएटर को दोबारा मेनस्ट्रीम में लाने की कोशिश में लगी हुई हैं। इस पर दो साल से जयपुर में काम कर रही हूं। मैंने अपनी नई प्रोडक्शन भी तैयार की है, जिसे बहुत पसंद किया गया है।' यह कहना है रंगकर्मी नम्रता शर्मा का, जो हिंदी के साथ-साथ मारवाड़ी थिएटर में भी काम करती हैं। शनिवार को वे पंजाब कला भवन में अपना नाटक 'हो रहेगा कुछ न कुछ' लेकर पहुंची तो उनसे बातचीत हुई। कहने लगीं, राजस्थान की लोक कला काफी समृद्ध है, इसमें थिएटर को ज्यादातर पपेट से ही जोड़ा गया है। पपेट से आगे भी एक अलग दुनिया है थिएटर की। जिसे अभी ज्यादा एक्सप्लोर नहीं किया गया है। ऐसा इसलिए क्योंकि वहां आने वाले टूरिस्ट वहां की वेशभूषा और गायिकी को ही ज्यादा पसंद करते हैं। ऐसे में रंगमंच की पहुंच थोड़ी फीकी पड़ गई, लेकिन समय-समय पर कुछ रंगकर्मियों ने इसे जिंदा रखा है। पर यह अब विलुप्त होने की कगार पर है। युवा होने के नाते हमारा यह फर्ज बनता है कि इसकी बागडोर संभाली जाए। इसलिए अपने ग्रुप खेला नाट्य संस्थान के जरिए इसको प्रोमोट करने की कोशिश में लगी हूं। यह ग्रुप हमनें पिछले साल ही बनाया है।'

मारवाड़ी थिएटर के लिए पटियाला से पहुंची जयपुर

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए बोलीं, 'मूल रूप से गंगानगर से हूं। थिएटर में एमए की है। पटियाला यूनिवर्सिटी में असिस्टेंट प्रोफेसर के तौर पर भी कार्यरत रही हूं। पंजाब में रहते हुए कई हिंदी और पंजाबी प्रोडक्शन कीं, लेकिन फिर लगा कि अपनी मातृभाषा के लिए भी कुछ करना चाहिए। इसलिए थोड़ा ब्रेक लेकर जयपुर गई और वहां पर अपना ग्रुप बनाया और मारवाड़ी थिएटर शुरू किया।

सिर्फ भाषा नहीं सेट, कॉस्ट्यूम और संगीत भी राजस्थानी

अपने नाटकों में राजस्थानी फ्लेवर रखने के लिए किसी भी तरह का कॉम्प्रोमाइज नहीं करती। सेट, कॉस्टयूम और संगीत पर काफी जोर देती हूं और इन्हें खुद ही सिलेक्ट करती हूं। सेट में राजस्थान के रेगिस्तान और पुराने घर जरूर दिखाती हूं। छाती कुट्टो रशियन लेखक अंतोन चेखव के लिखे अंग्रेजी नाटक फारस का मारवाड़ी रूपांतरण था, जिसे मैंने खुद ट्रांसलेट किया था। इसके बाद कुछ और नाटक लिख रही हूं जिसमें राजस्थानी कल्चर को आगे भी दिखा सकूंगी।